DEGLOOR COLLEGE, DEGLOOR

ISSN 2394-5303

विद्यावार्ता®

Issue-47, Vol-01 April- 2018

International Multilingual Refereed Research Journal

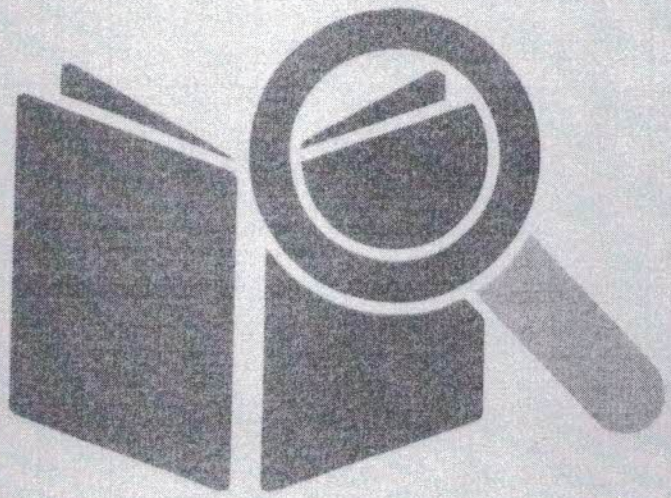

Editor

Dr.Bapu G.Gholap

www.vidyawarta.com

Dr. Anil Chidrawar
I/C Principal
A.V. Education Society's
Degloor College, Degloor Dist.Nanded

ADAT VYAPARI EDUCATION SOCIETY'S DEGLOOR COLLEGE, DEGLOOR Dist.Nanded

आंतरराष्ट्रीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

प्रिंटिंग एरिया

Printing Area International Interdisciplinary Research Journal in Marathi, Hindi & English Languages

April 2018, Issue-47, Vol-01

Date of Publication 30 April 2018

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

Co-Editor
Dr. Ravindranath Kewat
(M.A. Ph.D.)

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors : www.vidyawarta.com

ADAT VYAPARI EDUCATION SOCIETY'S DEGLOOR COLLEGE DEGLOOR Dist. Nanded

41) कृष्ण भक्ति आन्दोलन के परिप्रेक्ष्य में : चैतन्य, सूर,मीरा
डॉ. कुसुम नेगी, उत्तराखण्ड || 158

42) प्रबंधकीय विकास में वाल्मीकि रामायण की प्रासंगिकता
दिलीप सराह,उत्तराखण्ड || 164

43) पौराणिक ग्रंथों में तीर्थ यात्रा का महत्व
यशपाल सिंह, डॉ० एस०एल० भट्ट, उत्तराखण्ड || 170

44) रज्जबजी के साहित्य में मानवीय-मूल्य
डॉ. लियाकत मियाभाई शेख, औरंगाबाद || 173

45) महाकवि कालिदास और वैदिक साहित्य
डॉ.प्रयंका अग्रवाल,कोटवाडा. || 177

46) समकालीन कविता के प्रमुख हस्ताक्षर - राजेश जोशी
डॉ. सतोष विजय येरावार,देगलूर || 180

47) भारतीय जीवन बीमा निगम एवं बजाज एलियांज की योजनाओं का तुलनात्मक....
श्रीमति अर्चना अग्रवाल, विजय कुमार || 183

https://sites.google.com/site/vidyawartajournal | http://www.vidyawarta.blogspot.com

International Multilingual Research Journal

Printing Area

9850203295 7588057695

Editor Dr.Bapu G.Gholap

रूपमियत्तया वा ॥'' (रघु० १३,५)

अग्नि, जो यज्ञ के अधिपति, देवों के आह्वाता द्यावाप्रथिवी के अन्नदाता, सुवर्ण की तरह प्रभा वाले और शत्रुओं को रूलाने वाले हैं। उनको सुख की प्राप्ति के लिये ऋत्विक लोग बुलाते हैं। (ऋ०३, २, ५) (अभि० ४, ८) (कुमार १०, १७—१९)

जहाँ यजुर्वेद में **सूर्य** की स्तुति की गई है (यजु० १७, ५८—५९) वहीं कालिदास ने सूर्य को उसके अनेक रूपों में वर्णित किया है। कुमारसंभव में **सूर्य—चन्द्रमा** का संयुक्त वर्णन भी है। (कुमार० ८, १४) ऋग्वेद में कई स्थानों पर देवताओं की संयुक्त स्तुति भी की गई है। (ऋ० ८, २९, १—४)

वेदों में जब इन देवताओं का आह्वान किया जाता है, तब किसी अन्य देवता को श्रेष्ठ अथवा हीन शक्ति के द्वारा इनके गणों को सीमित नहीं माना जाता। स्तुति के समय प्रत्येक देवता को श्रेष्ठतम् निरपेक्ष तथा एक वास्तविक देवता ही माना जाता है ।

''नहि वो अस्त्यर्भको देवासो न कुमारकः विश्वे सतो महान्त इत् ॥ (ऋ० ८, ३०, १)

वेदों की यही धारणा हमें कालिदास के ग्रन्थों में भी मिलती है, तभी तो उनके ग्रन्थों में ब्रह्मा, विष्णु और महेश से लेकर नदी पर्वत तक की स्तुति है। कुमारसंभव के चतुर्दश सर्ग में कालिदास ने देवताओं का संयुक्त वर्णन किया है, साथ ही उनकी शक्ति का वर्णन भी किया है। किन्तु उन्हें श्रेष्ठ अथवा हीन ना मानकर सबको समान रूप से पूजा है। अतः यह कहना अतिशयोक्ति ना होगी कि कालिदास ने वेदों को आधार बनाकर अपने साहित्य की रचना की क्योंकि कालिदास के साहित्य में वैदिक प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है ।

❑ ❑ ❑

46

समकालीन कविता के प्रमुख हस्ताक्षर - राजेश जोशी

डॉ. सतोंष विजय येरावार
स्नातक एवं स्नातक्कोत्तर हिंदी विभाग प्रमुख
देगलूर महाविद्यालय देगलूर

****

समकालीन कविता यथार्थ, संवेदनाओं और अनुभवों की मार्मिक अभिव्यक्ती है | ईमानदारी, निर्भिकता, सामाजिकता एवं अदम्य साहस समकालीन कवियों की विशेषता है | व्यवस्था में व्याप्त विसंगती एवं विडम्बनाओं को अपनी वास्तविकता में कविता [illegible] ''समकालीन कविता आक्रोश तथा व्यंग के आनुपातिक मिश्रण के माध्यम से विसंगतियों के समुद्र में डूबकर, मानव जीवन के सृजनात्मक मूल्यों की तलाश का एक लघु किन्तु संकल्प भरा प्रयास है | समकालीन कविता का कक्ष्य यथार्थ पर आधारित वर्तमान समाज एवं राष्ट्र का एक सच्चा दस्तावेज है |'' समकालीन कविता यथार्थ से साक्षात्कार, मानवीय रिश्तो की चिन्ता, सामाजिक सरोकारों से जुडाव, संघर्ष और जुझारुपन, मानव मात्र की चिन्ता करने वाली कविता है | डॉ.ब्रजनाथ गर्ग समकालीन कविता के विषय में कहते है | ''आज की कविता की बात करते हुए हमें स्वनामधन्य, जाने - माने कवियों के साथ साथ नये और उभरे हुए कवियों की कविताओं को भी दृष्टि में रखना होगा, क्योंकि ये लोग आज के समस्या बहुल जीवन के विभिन्न पक्षों आयामों और संबधों को अपनी कविता का विषय बनाकर एक और अपनी रचना प्रक्रिया का परिचय दे रहे है तो दुसरी और आज की कविता को बंधे हुए घेरों से निकालकर जीवन और समाज कें बहुरुपीय संघर्ष की अभिव्यक्ति द्वारा उसे तीव्र गति से जीवन की समतल भूमि की ओर अग्रसर कर रहे है | आज का कवि राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक समस्याओं का केवल अस्त्र नहीं है अपितु उनके प्रति जागरुक भी है और इसलिए वह अत्याचार, अनाचार, अन्याय, आर्थिक विषमता, जातीयता, साम्प्रदायिकता, अनुशासनहीनता, युवा आक्रोश तथा मूल्यहीन राजनीति को अपनी कविता का विषय बनाकर अपने साहस और दायित्व बोध का परिचय दे रहा है |''

ADAT VYAPARI EDUCATION SOCIETY'S DEGLOOR COLLEGE, DEGLOOR Dist.Nanded

ADAT VYAPARI EDUCATION SOCIETY'S DEGLOOR COLLEGE, DEGLOOR Dist.Nanded

समकालीन कविता के प्रमुख हस्ताक्षर कवियों में राजेश जोशी का नाम अग्रणी है | समाज और मानवमात्र से सरोकार रखनेवाले राजेश जोशी अत्यंत संवेदनशील रचनाकार है | समाज में व्याप्त विसंगती एवं विडंबनाओं को निर्भिकतासे उघाडने का और समाज का पथप्रदर्शन करने का अतुलनीय कार्य किया है | सामाजिक , धार्मिक , शैक्षिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों में व्याप्त विकृतियों को निर्भिकतासे उघाडने का कार्य राजेश जी ने किया है | नंदकिशोर नवल राजेश जोशी की कविता के विषय में लिखते है, "राजेश दुसरी तरफ का कवि है | जिन्होंने अपना विकास केदार, नागार्जुन और त्रिलोचन की परंपरा को आत्मसात करके किया है | इनमें जो सरलता और सामाजिक प्रतिबध्दता थी उसे वही से बल प्राप्त हुआ था | अकवितावादी और नक्सलवादी माहोल में इन कवियोंने अपनी कविता से हिंदी कविता के पाठको को राहत पहुँचाई थी | इनमें कोई कलाबाजी न थी इनके मुहावरे न बनावटी थे, और इनकी प्रतिबध्दता सच्ची थी |"

राजेश जोशी ने अपनी कविता को परिवर्तन एवं नवनिर्माण का अस्त्र बनाया था | सडी - गली, मरन्नासन, अनुपयोगी मान्यताओं एवं प्रथाओं को बदल कर नई सर्वसमावेश मान्यताओं को अपनाने पर बल देते हैं | समाज में व्याप्त विकृतियों के कारण मानव भी विकृत बनता जा रहा है इसलिए बदलाव आवश्यक है |

"बदलो ! बदलो !
बदलो इस संसार को !!
मैंने खटखटाए तमाम सितारों के दरवाजे
और हुक्म दिया उन्हें कि कल आना
हाजिर होना कल, हमारे दरबार में
कल लिखाऊँगा मैं तुम्हे
नई दुनिया की संरचना का नया ड्राप्टा"

मानव मानसिक रुप में आज भी मान्यताओं के जंजिर में जखडा हुआ है | जब तक इन जंजीरो को तोडा नहि जाएगा तबतक नए संसार की स्थापना नहि होगी |

मारे जाएँगे कविता राजनीति एवं व्यवस्था में व्याप्त विकृत एवं विक्षिप्त मानसिकता को उघाडने वाली कविता है | राजनीति और राजनेताओं ने अपनी लालसा हेतू आम आदमी को आतंकित कर दिया है | राजनीति के विकृत, भ्रष्ट , कुलूषित, स्वार्थी एवं घृणित मानसिकताने ऐसा तांडव किया है कि मानव उनकी कठपुतली बन गया है | भाषा, प्रांत, वर्ग, वर्ण, धर्म एवं जाति -पाति के नामदर लोगो को बाँटकर और तोडकर अपने स्वार्थ की पुर्ती कि जा रही है | मारे जाएँगे कविता आम - आदमी और वर्तमान व्यवस्था की विवशता को अभिव्यक्त करती है | राजनीतिक विशाक्त लालसा ने संपुर्ण व्यवस्था को पतित, विकृत एवं विषम बना दिया है | सत्य, अहिंस, त्याग, मानवता, बंधुता जैसे मुल्य व्यवस्था को नश्तर की तरह चुभ रहे है | धोखा, आतंक, लुट - खसोट, बेईमानी, चापलुसी, भ्रष्टाचार एवं विषमता व्यवस्था के अंगविशेष बन गए हैं जो ईन अंगविशेष का हिस्सा नहिं होगे वे मारे जा रहे है | राजनीतिक षडयंत्र से मारे जाने का भय अवाम को सता रहा है | मानवता एवं संवेदनाए नष्ट होने के कगार पर है | समकालीन विकृत परिस्थिती में मानवता को बचाने का और मानव को सचेत करने का प्रयास किया गया है | 'मारे जायेंगे ' कविता से

"कटघरे में खडे कर दिये जायेंगे, जो विरोध में विरोध में बोलेंगे
जो सच - सच बोलेंगे, मारे जायेंगे
बर्दाश्त नहीं किया जायेगा कि किसी की कमीज हो
"उनकी" कमी से ज्यादा सफेद
कमीज पर जिनके दाग नहीं होंगे, मारे जायेंगे"

सबसे बडा अपराध है इस समय निहथे और निरपराध होना जो अपराधी नहीं होंगे मारे जायेंगे |

राजनेताओं ने एक ऐसी व्यवस्था विकसित की हैं जिसमें अपराधी, गुंडो, ढोगी, झुठे एवं फरेबी लोगो का बोल बाला होगा चरित्र संपन्नता एवं आदर्शो को महत्व नहिं होगा तो महत्व होगा केवल चरित्रहिनाता और मुल्यहिनता को | निरपराध लोग तो आज व्यवस्था के षडयंत्र का शिकार हो रहे है | वर्तमान व्यवस्था में ज्ञान एवं सामर्थ्य को महत्व नहिं है | कला एवं योग्यता को भी महत्व नहिं है | वर्तमान में महत्व है तो केवल चापलुसी और ढोगीयों का जो लोग तलवे चाटना जानते है वही सफल हो रहे हैं | बुराई और आडंबर की एक ऐसी पगडंडी विकसित की गई है कि लोग अब मुख्य रास्ते को निरर्थक मानने लगे है | सत्ता, पुरस्कार, समिती सदस्यता एवं विदेश यात्रा पाने के लिए चापलुसी को हत्यार बनाया जा रहा है | जो इस व्यवस्था को स्विकार नहीं करेगा उसे दरकिनार कर दिया जायेगा, मारे जायेंगे, कविता में राजेश जोशी कहते है | -

"धकेल दिये जायेंगे कला की दुनिया से बाहर, जो चारण नहीं
जो गुण नहीं गायेंगे, मारे जायेंगे | "

'मैं झुकता हूँ' कविता में भी कवि कहते है किस प्रकार लोग अपमानित होकर भी चापलुसी करते है | मान सम्मान को बेचकर भी स्वार्थ को महत्व दिया जा रहा है | इस वास्तविकता को कवि ने उघाडा है |

"जैसे एक चापलूस की आत्मा झुकती है
किसी शक्तिशाली के सामने

जैसे लज्जित या अपमानित होकर झुकती है आँखे |"

राजनीति के विकृत विशाक्त एवं सत्ता मोहि लालसा ने नेताओं को भी विकृत एवं चरित्रहिन बना दिया है | नेता सत्ता में आने के लिए सारे जायज - नाजायज हतकंडे अपनाते हैं | नेताओं ने बेशर्मी, नाटकियता, ढोंग, लुट - खसोट, दमन, भ्रष्टाचार, विघटन एवं सांप्रदायिक दंगो को सत्ता पाने के अस्त्र के रुप में प्रयोग किया हैं | जैसी परिस्थिती है वेसा जहरिला अस्त्र नेताओं द्वारा प्रयोग में लाया जाता हैं | धर्म, जाति - पाति, भाषा, वर्ग, वर्ण, प्रांत, आतंकवाद, नक्सलवाद एवं दमनशाहि आदि जहर का प्रयोग भ्रष्ट एवं पतित राजनिती का सफलता का मंत्र बन गया है | नेता वर्ग जहर का प्रयोग करने में इतने माहिर हो गए हैं क अवाम को पता तक नहि चलता की किस नेता नें कौनसा जहर परिस्थितियों में फैलाया है | नेताओं की इस मानसिकता को और राजनीति के घिनौने एवं विशाक्त रुप को उघाडने वाली राजोरा जोशी की 'जहर के बारे में कुछ' बेतरतीब कविता से है |

"सत्ताएँ इस जहर के बारे में
बहुत अच्छी तरह जानती हैं
और इसका उपयोग करने में
बहुत हुनरमंद होती है
धीमें जहर की यह
तासीर होती है
कि वह बहुत धीरें - धीरे
खत्म करता है जीवन को "

जहर , विकृती एवं भय को फैलाने वाले नेताओंने समस्त मानवता को कलंकित किया हैं | व्यवस्था को खोकला बनाया जा रहा, समाज को पतित बनाया जा रहा हैं और विडंबना यह है कि सबकुछ खुली ऑखों के सामने हो रहा हैं |

'राजेश जोशी' नें धर्मक्षेत्र में व्याप्त विकृतियों एवं जहर को भी उघाडा है | धर्म के नाम पर लोगो को भ्रमित, बेबस, लाचार, विवेकहिन एवं आतंकित किया जा रहा हैं | धर्म के ठेकेदार और स्वार्थी नेता धर्म का नाजायज फायदा उठा रहे है | धर्म के नाम पर दंगो , विघटन और आक्रोश को बढावा दिया जा रहा है | धर्म के नाम पर युवकों को आतंकवादि एवं अपराधी बनाया जा रहा है | धर्म के वास्तविक मान्यताओं, एवं मुल्यो से परे होकर धर्म के विकृत, घृणित वं जहरिले रुप को बढावा दिया जा रहा हैं | सांप्रदायिक ताकते धर्म के नाम पर अवाम को बरगलानें मे सफल भी हो रही है | इसका जिवंत उदाहरन हैं आय.एस.आय.एस. आतंकवादि संघटन | इस संघटन ने धर्म के नाम पर वेसा आतंक फैलाया है कि रोंगते खडे हो जाए | क्रुरता, हिंसा, पशुता एवं अमानवियता की सारी हदे इन धार्मिक आतंकवादी संघटनो ने लाँघी है | हत्या का येसा तांडव शायद हि पहले कभी देखा गया होगा | तालिबान, हिजबुल मुजाहिद्दीन, अलकायदा, अबुसयाक, अलबदर, हरकत - उल - जिहाद - ए - इस्लामी, पाकिस्तानी तालिबान अलनुसार फ्रंट एवं बोको हराम जेसे आतंकवादी संघटन धर्म, जिहाद, जन्नत एवं काँफर के नाम पर आतंक फैला रहे हैं | धर्म के नाम पर होने वाली विकृतियों को 'मारे जायेंगे' इस कविता में उघाडा गया हैं |

"धर्म की ध्वजा उठाये जो नहीं जायेंगे जुलूस मे
गोलियाँ भून डालेंगी उन्हें, काफिर करार दिए जायेंगे |"

राजेश जोशी की कविताओं में नारी सामर्थ्य की झलक भी दिखाई देती है | स्त्री को संवैधानिक स्वातंत्र का केवल अधिकार मात्र काफी नहीं है | उस अधिकारों को जीने की स्वतंत्रता भी व्यवस्था के द्वारा दि जानी चाहिए तभी उसका महत्व है | स्वतंत्रता के खातिर स्त्री व्यवस्था से लढ रही है वे अपने संपुर्णता में जिना चाहती हैं | अपने सामर्थ्य का प्रयोग करना चाहती है | राजेश जोशी जी की 'देख चिडिया' की ये पंक्तियाँ

"इन सबसे निबटने को
काफी नहीं है
पंख होना
या सीख लेना उडना |
बारुद के रंगवाली चिडिया
बारुद का सुभाव भी सीख
उडना - गाना
तो ठीक
लेकिन
ताब खाना भी सीख"

जिस दिन स्त्री अपने शक्ति से परिचित हों जाएंगी और व्यवस्था से संघर्ष करेगी तभी वह अपनी संपुर्णता में जीवन यात्रा का सफर कर पायेगी |

राजेश जोशी समकालीन कविता के नायक के रुप में उभरे कवि है | राजेश जी ने कविता को समाज परिवर्तन का हत्यार बनाया समस्याओं के विरोध में आवाज उठाने के लिए प्रेरित किया | सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं साहित्यिक क्षेत्र में व्याप्त विसंगतियों, विडम्बनाओं एवं विषमताओं को अपनी कविता के माध्यम से उदघाटित किया | आम आदमी बडे सम्मानपूर्वक राजेश जोशी की कविता में विद्यमान है | राजनीति एवं व्यवस्था से त्रस्त आदमी उनकी कविता में है | उदासिनता एवं निराशा में फँसे आदमी को आशा की किरन

दिखाने का सामर्थ्य इनकी कविता में है | क्रुर मानसिकता को अभिव्यक्त कर समाज को सचेत एवं परिवर्तित करने की शक्ती इनकी कविता में है | परिवर्तन एवं नवनिर्माण राजेश जी की कविता की विशेषता है | उनकी कविता में यथार्थ का चित्रण, समस्याओं का निर्भिक अंकण, संघर्ष और जुझारुपन, मानव मात्र की चिन्ता, व्यंग्यात्मक शैली, सामाजिक प्रतिबध्दता, एवं परिवर्तन की बयार दिखाई देती है | जाति प्रथा, अंधश्रध्दा, सांप्रदायिकता, धर्मांध ताकतों, अनयाय एवं अत्याचार के विरोध में अपनी आवाज बुलंद करने वाले कवि राजेश जी है | डॉ.संतोष कुमार तिवारी के अनुसार "राजेश की कविताएँ आशंका से भरी इस दुनिया में हर पल अपनी परेशानी के बावजूद सपनों की दुनिया का रचाव भी करती है |"

❑ ❑ ❑

47

भारतीय जीवन बीमा निगम एवं बजाज एलियांज की योजनाओं का तुलनात्मक आर्थिक विष्लेशण (जिला–रायगढ़ के विषेश संदर्भ में)

शोध निर्देशकः–
श्रीमति अर्चना अग्रवाल
सहायक प्राध्यापिका प्रबंधन विभाग
डॉ. सी वी रमन् विश्वविद्यालय,बिलासपुर (छ.ग)

शोधकर्ता
विजय कुमार
छात्र एम.फील (वाणिज्य)

****

इस शोध पत्र के द्वारा जीवन बीमा निगम एवं बजाज एलियांज की योजनाओं का समग्र आर्थिक विश्लेषण करने के पश्चात दोनों बीमा कम्पनियों की वर्तमान स्थिति को बीमाधारी के आधार पर दर्शाया गया है। वैसे तो वर्तमान में कई बीमा कम्पनियां अपने कार्य में तो वर्तमान में जीवन बीमा निगम व बजाज एलियांज बीमा धारियों की भविष्य को सुरक्षित रखने के लिये कई लाभकारी योजनाएं संचालित कर रही है, जिससे कई हितग्राही व उनके परिवार लाभान्वित हो रहे हैं व होते रहेंगे।

जीवन बीमा से संबंधित प्रश्नों के उत्तर का सांख्यिकीय निष्कर्ष के रूप में गणना करने के लिए मैंने, इस शोध में से संबंधित १०० व्यक्तियों से प्रश्नावली के माध्यम से वैद्यानिक व अवैधानिक प्रश्न किये गये, और सूचनाओं की जानकारी एकत्रित की जिससे यह पाया गया कि जिसमें ५८: LIC से और ४२: bajaj Alianaz से सहमत मिले। कार्यालय शाखा से जीवन बीमा निगम वाले ८०: संतुष्ट रहें जबकि बजाज एलियांज वाले ७०: वाले संतुष्ट रहें ।

Dr. Anil Chidrawar
I/C Principal
A.V. Education Society's
Degloor College, Degloor Dist.Nanded

DEGLOOR COLLEGE, DEGLOOR · A.V. EDUCATION SOCIETY · Dist.Nanded